कृत्यप्रकरण के व्याख्यात सूत्र

२८२२। अर्हे कृत्यतृचश्च ३।३।१६९।

प्रकृत सूत्र लकारार्थ प्रकरण में लिङ् लकार तथा उसी अर्थ में कृत्य प्रत्यय का विधायक है। यहाँ 'लिङ् यदि' सूत्र से 'लिङ्' की अनुवृत्ति होती है। 'धातोः' का यहाँ अधिकार आता है। अतः इस सूत्र का अर्थ है—

अर्हे अर्थे धातोः लिङ् लकारस्तथा कृत्यप्रत्ययः तृच्-प्रत्ययश्च स्यात्।

अर्थात् अर्ह (योग्य) अर्थ में धातु से कृत्यसंज्ञक एवं तृच् प्रत्यय होते हैं तथा सूत्र में चकार के ग्रहण से उसी अर्थ में लिङ् लकार भी होता है। लिङ् से कृत्य एवं तृच् का बाध न हो इसलिये सूत्र में कृत्य-तृच् का ग्रहण किया है, इस कृत्य एवं तृच् ग्रहण से यहाँ 'वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्' की प्रवृत्ति नहीं है। अन्यथा विकल्प से बाधने पर पक्ष में कृत्य एवं तृच् होता। पुनः इनका ग्रहण व्यर्थ हो जाता—'क्तल्युट्खलर्थेषु वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्' की अप्रवृत्ति ही है।

इसका उदाहरण है—त्वं कन्यां वहेः।

यहाँ कन्या वहन की अर्हता बताने के लिये यह प्रयोग है। इसलिये वह धातु से लिङ् लकार हुआ है।

इसी अर्थ में कृत्य प्रत्यय का उदाहरण है—त्वया कन्या वोढव्या।

तृच् का उदाहरण है—त्वं कन्यां वोढा।

इन तीनों वाक्यों का अर्थ समान ही है जबकि प्रथम वाक्य लिङ् लकार का है तो दूसरा वाक्य कृत्य का और तीसरा तृच् का है। अतः योग्य अर्थ में तीनों का प्रयोग विहित है।

२८२३। शकि लिङ् च ३।३।१७२।

प्रकृत सूत्र तिङन्त के लकारार्थ प्रकरण में लिङ् लकार तथा कृत्य प्रत्यय का विधान करता है। इस सूत्र में 'च' से 'कृत्याः' के प्रकरण में पढ़े गये कृत्य प्रत्ययों का आकर्षण होता है। इसलिये सूत्र की वृत्ति में कहा गया है—

शक्तौ लिङ् स्यात्, चात्कृत्याः।

अर्थात् शक्ति अर्थ प्रतीत होने पर धातु से लिङ् लकार होता है तथा कृत्य प्रत्यय होते हैं। लिङ् का उदाहरण है—त्वं भारं वहेः। यहाँ शक्ति अर्थ बताने के लिये तुम भार ढोओगे—इस कथन में वह धातु से लिङ् लकार होकर मध्यम पुरुष एक वचन में 'वहेः' रूप होता है।

उसी अर्थ में त्वया भारः 'वोढव्यः' भी प्रयोग होता है। यहाँ वह धातु से कृत्य प्रत्यय (तव्यत्) का प्रयोग किया गया है।

इस सन्दर्भ में बताया गया है कि 'माङ्' का प्रयोग हो तो शक्य अर्थ में भी लुङ् लकार होता है। सूत्र है—'माङि लुङ्'। इसका उदाहरण है—'मा कार्षीः'। अर्थात् तुम ऐसा नहीं कर सकते हो।

किन्तु कहीं-कहीं 'मा' के साथ लोट् लकार और लृट् लकार का भी प्रयोग देखा जाता है। अतः शंका की जाती है—कथं 'मा भवतु' 'मा भविष्यति' इति।

उसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि लोट् और लृट् में 'माङ्' अव्यय नहीं है किन्तु 'मा' अव्यय है। दोनों अव्यय 'मत' अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। 'माङ्' के योग में सभी लकारों को बाधकर 'लुङ्' लकार ही होता है, किन्तु उसी अर्थ में 'मा' अव्यय का प्रयोग रहने पर अन्य लकार-लोट् एवं लृट् आदि भी होते हैं।

२८३०। वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ३।१।९४।

प्रकृत सूत्र सिद्धान्तकौमुदी के कृत्प्रत्यय प्रकरण का है। यह सूत्र 'धातोः' के अधिकार में पढा गया है। यह परिभाषा सूत्र है। अनियम में नियमकारिणी को परिभाषा कहते हैं। यह सामान्य परिभाषा स्वरूप है। व्याकरण में परिभाषा है—

परनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः।

अर्थात् पर, नित्य, अन्तरङ्ग और अपवाद सूत्रों में अपेक्षाकृत बाद वाले बली होते हैं। इसके अनुसार सामान्य सूत्र से अपवाद सूत्र अधिक बलवान होता है। यह सामान्य रूप से कहा गया है। इसके भी अपवाद रूपमें पाणिनि का सूत्र है—

वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्।

इस सूत्र की वृत्ति में कहा गया है—

अस्मिन् धात्वधिकारेऽसरूपोऽपवादप्रत्यय उत्सर्गस्य बाधको वा स्यात् स्त्र्यधिकारोक्तं विना।

अर्थात् इस धातु के अधिकार में असमान रूप वाला अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग सूत्र का बाधक विकल्प से होता है। किन्तु 'स्त्रियां क्तिन्' इस सूत्र से 'स्त्रियाम्' के अधिकार में आये सूत्रों को छोड़कर ही विकल्प बाधता है उसके अधिकार के सूत्रों में तो नित्य ही बाधता है।

इस सूत्र का उदाहरण है—देयम्, दातव्यम्, पठनीयम् आदि। यहाँ 'अचो यत्' सूत्र से विहित यत् प्रत्यय का 'तव्यत्तव्यानीयरः' से नित्य ही बाध होता। किन्तु इस सूत्र की परिभाषा के अनुसार विकल्प से बाधक होता है। फलस्वरूप दा धातु से यत् और तव्यत् दोनों प्रत्यय होने पर देयम् और दातव्यम् दोनों रूप सिद्ध होते हैं।

दूसरी ओर यत् और ण्यत् प्रत्यय में 'य' ही बचता है। ये दोनों समान रूप वाले प्रत्यय हैं। इसलिये ण्यत् प्रत्यय से यत् का बाध नित्य होता है जिससे कृ धातु के अजन्त होने पर भी 'अचो यत् से यत्' नहीं होता, किन्तु ऋहलोर्ण्यत् से ण्यत् प्रत्यय होकर कार्यम् रूप सिद्ध होता है।

यह परिभाषा 'स्त्रियां क्तिन्' के अधिकार में नहीं लगती है। इसलिये वहाँ 'स्त्रियां क्तिन्' आदि प्रत्ययों का नित्य ही बाध होता है जिससे 'ण्यासश्रन्थो युच्' सूत्र से 'कारणा' 'हारणा' आदि प्रयोगे में 'युच्' प्रत्यय ही होता है।

२८३२। कर्तरि कृत् ३।४।६५।

प्रकृत सूत्र कृदन्त प्रकरण में कर्ता अर्थ में कृत् प्रत्यय का विधान करने वाला सूत्र है। यहाँ धातोः का अधिकार आता है। अतः सूत्र का अर्थ होता है कि धात्वर्थ व्यापाराश्रय कर्ता में धातु से कृत् प्रत्यय होता है। कृत् को परिभाषित करते हुए पाणिनि ने सूत्र लिखा है—

कृदतिङ्।

अर्थात् तिङ् (तिप्, तस्, झि आदि) से भिन्न सभी प्रत्यय जो धातु से लगते हैं कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। इसमें कृत्य (तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप् और केलिमर्) तृच्, ण्वुल, अण् तथा क्, आदि प्रत्यय आते हैं।

'कर्तरि कृत्' का अपवाद सूत्र है—'तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः'। इसका अर्थ है कि कृत्य प्रत्यय, क्त प्रत्यय एवं खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं, कर्ता अर्थ में नहीं। जैसे भाव में 'एध समृद्धौ' से तव्यत् (कृत्य) करने पर एधितव्यम् तथा कर्म अर्थ में 'चिञ् चयने' धातु से तव्यत् करने पर चेतव्यः प्रयोग (पुंल्लिङ्ग में) बनते हैं।

इस प्रकार कृत्य, क्त और खलर्थ प्रत्यय तो भाव और कर्म अर्थ में होते हैं, किन्तु इनको छोड़कर सभी कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में धातु से लगते हैं। जैसे 'वच् परिभाषणे' धातु से कर्ता अर्थ में 'ण्वुल्तृचौ' सूत्र से 'ण्वुल्' एवं 'तृच्' प्रत्यय करने पर क्रमशः वाचकः और वक्ता पद बनते हैं। इसका अर्थ है बोलने की क्रिया को करने वाला।

इसी तरह बुध् एवं ज्ञा धातु से कर्ता अर्थ में 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' सूत्र से 'क' प्रत्यय होने पर क्रमशः बुधः तथा ज्ञः पद सिद्ध होते हैं।

२८३३। तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ३।४।७०।

व्याख्येय सूत्र कृत्प्रत्ययों के अर्थ का प्रतिपादक है। यहाँ 'धातोः' का अधिकार आता है तथा 'भावकर्मणोः' सूत्र की अनुवृत्ति होती है। सामान्य रूप से 'कर्तरि कृत्' सूत्र से कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थ में होते हैं जिसका यह अपवाद है—तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः। इस सूत्र की वृत्ति इस प्रकार है—

एते भावकर्मणोरेव स्युः।

अर्थात् कृत्य प्रत्यय, क्त प्रत्यय एवं खलर्थ वाले प्रत्यय भाव और कर्म में ही होते हैं।

इसमें भाव का उदाहरण है—एधितव्यम्।

'एध वृद्धौ' धातु के अकर्मक होने के कारण भाव अर्थ में 'तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः' सूत्र से तव्यत् प्रत्यय होने पर 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इट् का आगम होने पर एधितव्य शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा के बाद सु विभक्ति में एधितव्यम् रूप सिद्ध होता है।

कर्म का उदाहरणहै—चेतव्यः धर्मस्त्वया ।

यहाँ चि धातु के सकर्मक होने के कारण कर्म अर्थ में तव्यत् प्रत्यय होने पर गुण होकर चेतव्य शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा कर सु विभक्ति में कर्म (धर्म) के पुंल्लिङ्ग होने के कारण चेतव्य से आये सु का रुत्व एवं विसर्ग होकर चेतव्यः पद बनता है तथा चेतव्यः धर्मस्त्वया वाक्य बनता है। तव्यत् प्रत्यय से कर्म के उक्त हो जाने से धर्मः में प्रथमा हुई और तदनुसार चेतव्यः भी प्रथमान्त पद हुआ ।

'क्त' प्रत्यय का उदाहरण—दृष्टः बालकः ।

यहाँ दृश् धातु से क्त प्रत्यय कर्म अर्थ में होने पर कर्म के उक्त होने से बालक में प्रथमा विभक्ति हुई तथा दृष्टः भी प्रथमान्त है ।

इसी प्रकार खलर्थक भी भाव एवं कर्म में होते हैं ।

२८३४ । तव्यत्तव्यानीयरः ३।१।९६ ।

प्रश्नोद्धृत सूत्र कृदन्त-कृत्य प्रकरण का है। इस सूत्र में 'धातोः' का अधिकार है तथा 'प्रत्ययः' एवं 'परश्च' का अधिकार आता है। इसलिये इस सूत्र की वृत्ति में कहा गया है—

धातोरेते प्रत्ययाः स्युः । तकाररेफौ स्वरार्थौ ।

अर्थात् धातु से पर में तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्यय होते हैं। 'तव्यत्' का 'त्' इत्संज्ञक है जिससे 'तित् स्वरितम्' सूत्र से यहाँ स्वरित स्वर होता है। इसी तरह 'अनीयर्' के 'र्' की इत्संज्ञा होती है । इसलिये 'उपोत्तमं रिति' सूत्र से मध्योदात्तार्थ रेफ है ।

'तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः' सूत्र के अनुसार कृत्य (तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप् और केलिमर्) प्रत्यय, क्त और खलर्थक प्रत्यय भाव एवं कर्म में ही होते हैं इसलिये सकर्मक धातु से कर्म में तथा अकर्मक धातु से भाव में ये प्रत्यय होते हैं ।

एध धातु अकर्मक है। इसलिये भाव में उससे तव्यत् प्रत्यय होने पर 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से इट् का आगम होने पर एधितव्य शब्द से प्रातिपदिकादि कार्य होने पर एधितव्यम् प्रयोग बनता है। भाव सदा एक वचन तथा नपुंसक होता है। अतः त्वया एधितव्यम् यही प्रयोग होता है । यहाँ तव्यत् प्रत्यय से कर्ता के अनुक्त हो जाने के कारण उसमें तृतीया विभक्ति हुई है ।

कर्म में तव्यत् प्रत्यय का उदाहरण है—

त्वया धर्मश्चेतव्यः ।

यहाँ सकर्मक चि धातु से कर्म अर्थ में तव्यत् प्रत्यय होने पर चेतव्यः रूप होता है। यहाँ कर्म में प्रत्यय होने के कारण कर्म के अनुसार लिङ्ग वचन आदि होते हैं। धर्म शब्द पुंल्लिङ्ग है, अतः चेतव्यः पुंल्लिङ्ग रूप प्रयुक्त है ।

इसी तरह एध से अनीयर् प्रत्यय में एधनीयम् तथा चि से अनीयर् करने पर चयनीयः आदि प्रयोग होते हैं ।

२८३७। हलश्चेजुपधात् ८।४।३१।

प्रकृत सूत्र कृदन्त प्रकरण की कृत्यप्रक्रिया से उद्धृत है। यह कृत्यप्रकरण में णत्व विधायक सूत्र है। यहाँ 'कृत्यचः' की अनुवृत्ति होती है तथा 'रषाभ्यां णो नः समानपदे' से 'रषाभ्याम्' का सम्बन्ध होता है। 'उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य' सूत्र से 'उपसर्गात्' का सम्बन्ध होता है एवम् 'धातोः' का अधिकार आता है। इस सूत्र की वृत्ति में कहा गया है—

हलादेरिजुपधात्कृन्नस्याचः परस्य णो वा स्यात्।

अर्थात् हलादि (जिसके आदि में व्यज्जन वर्ण है।) एवम् इजुपध (जिसकी उपधा में इच्=इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ हों) धातुओं के अच् से पर में रहने वाले कृत् प्रत्यय के 'न' का उपसर्गस्थ निमित्त रहने पर विकल्प से णत्व होता है। इसका उदाहरण है—

प्रकोपणीयम्—प्रकोपनीयम्।

यहाँ प्र उपसर्ग पूर्वक कुप् धातु से अनीयर् प्रत्यय करने पर गुण के बाद 'प्रकोपनीय' की स्थिति में उपसर्ग में रहने वाले रेफ निमित्त होने से तथा हलादि एवम् इजुपधक कुप् धातु से कृत्य प्रत्यय होने पर उसके अनीयर् के 'न' का 'हलश्चेजुपधात्' सूत्र से विकल्प से णत्व होने पर प्रकोपणीयम् तथा पक्ष में णत्व नहीं होने से प्रकोपनीयम् पद प्रातिपदिकसंज्ञा तथा विभक्तिकार्य के बाद बनता है।

सूत्र में 'हलः' पाठ होने से हलादि धातु से ही प्रकृत सूत्र से णत्व का विधान होता है। अतः प्र पूर्वक उह धातु से अनीयर् होने पर धातु के अजादि होने के कारण 'हलश्चेजुपधात्' से विकल्प से णत्व नहीं होता है, किन्तु 'कृत्यचः' सूत्र से नित्य ही णत्व होकर प्रोहणीयम् पद बनता है।

सूत्र में 'इजुपधात्' पढ़ने के कारण प्र पूर्वक वप् धातु से 'अनीयर्' प्रत्यय करने पर प्रवपनीय की स्थिति में धातु के इजुपध नहीं होने के कारण विकल्प से णत्व नहीं होता है किन्तु 'कृत्यचः' सूत्र से नित्य ही णत्व होने पर प्रवपणीयम् प्रयोग सिद्ध होता है। यह प्रत्युदाहरण है।